परिचय

गिनती की पुस्तक, पवित्र शास्त्र में पाए जाने वाले कुछ बहु-प्रचलित कहानियों का भण्डार है। उन कहानियों में, बारह भेदियों का कनान में जाना (अध्याय 13), कोरह का विद्रोह और मृत्यु (अध्याय 16), लगभग चालीस वर्षों तक इस्राएलियों का जंगल में भ्रमण (अध्याय 14-21), पीतल का सर्प (अध्याय 21), और गधे के साथ बिलाम की बातचीत (अध्याय 22), ऐसी पाँच रोचक महत्वपूर्ण कहानियां हैं। ये कहानियां तब और अधिक आकर्षक बन जातीं हैं, जब हम यह समझ लेते हैं कि मूसा की व्यवस्था के विस्तृत संदर्भ में ये कैसे समायोजित होते हैं।

संदर्भ

गिनती की पुस्तक, मूसा की व्यवस्था का अभिन्न अंग होने के कारण, यह इस्राएलियों को सीनै पर्वत से मोआब के मैदान की ओर यात्रा का कहानी सार प्रस्तुत करती है। यह इस्राएलियों को विधियां दिए जाने एवं कनान देश पर अधिकार प्राप्त करने के बीच पुल का निर्माण करती है।

उत्पत्ति की पुस्तक, मानवजाति के आरंभिक इतिहास का निरूपण करने के पश्चात, परमेश्वर द्वारा अब्राहम को बुलाए जाने को पुनः रेखा चित्र करती है, यह जब परमेश्वर ने बाप-दादों को प्रतिज्ञाएं दी थी, उसका सर्वेक्षण करती है, और याकूब (या "इस्राएल") और उसके परिवार के मिस्र पलायन के वृतांत के साथ ही समाप्त होता है।

निर्गमन की पुस्तक, इस्राएलियों की मिस्र की गुलामी के साथ प्रारंभ होती है। परमेश्वर उनको नाटकीय ढंग से मिस्र से छुड़ाकर सीनै पर्वत तक ले आता है, जहाँ वह उनके साथ वाचा बांधता है। वहाँ से आगे, निर्गमन की पुस्तक यह बताती है कि परमेश्वर ने अपनी विधियां अपने लोगों को दी और उन्हें उसके लिए निवास स्थान बनाने का निर्देश दिया। पुस्तक के अंत में, निवास स्थान का निर्माण हो चुका था और यह इस्राएलियों के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त आराधना का स्थान बन चुका था। लैव्यव्यवस्था की पुस्तक में अनगिनत विधियां - विशेषकर जो धार्मिक अनुष्ठान तथा बलिदान से संबंधित है, पाई जाती है - जिसे परमेश्वर ने इस्राएलियों को सीनै पर्वत के प्रवास के दौरान दिया था।

गिनती की पुस्तक, लैव्यव्यवस्था के समानांतर, इस्राएलियों के प्रतिज्ञा के देश की सीमा तक पहुँचने का क्रमवार कहानी जारी रखती है। यह यात्रा उनके पाप और दण्ड के रूप में तब तक उनको जंगल भ्रमण कराती है, जब तक एक पूरी पीढ़ी समाप्त नहीं हो जाती है, के साथ आरंभ होती है। इसके पश्चात गिनती की पुस्तक इस बात का पुनरावलोकन करती है कि अड़तीस वर्ष भ्रमण के पश्चात, किस प्रकार

इस्राएल ने यरदन के पूर्व के देशों पर विजय प्राप्त की थी। इसके अंतिम अध्यायों में इस्राएलियों का मोआब के मैदान में डेरा तथा कनान देश में प्रवेश की तैयारियों के बारे में उल्लेख पाया जाता है।

व्यवस्था विवरण की पुस्तक में मूसा के चार भाषण पाए जाते हैं, प्रथम, मरुस्थल में इस्राएलियों के अनुभव के अभ्यास के बारे में है - जो गिनती की पुस्तक की विषय वस्तुओं में से एक प्रमुख विषय है। मूसा ने इस्राएलियों की नई पीढ़ी को संबोधित किया और उनसे आग्रह किया कि जब वे प्रतिज्ञा का देश, जिसे परमेश्वर उनको देने पर था, में प्रवेश करेंगे तो वे परमेश्वर की विधियों का पालन करें।

नाम

गिनती की पुस्तक का नाम सप्तति (सेप्टुजिंट; LXX), इब्रानी बाइबल का प्राचीन यूनानी अनुवाद, से उद्धृत है, जहाँ यह Ἀριθμοι *(अरीथमोई)* कहलाता है। लातीनी भाषा में इसका अनुवाद *नूमेरी* किया गया है, जहाँ से इसको इसका अंग्रेजी शीर्षक "नम्बर्स" प्राप्त हुआ।[1] यह नाम इस पुस्तक की दो जनगणना को संबोधित करता है (1:1-46; 26:1-51)। इस पुस्तक का इब्रानी शीर्षक, בְּמִדְבַּר *(बेमिदबार)*, पुस्तक की प्रथम पंक्ति से लिया गया है, जिसका अर्थ "जंगल में" है। चूँकि यह निवास स्थान के बनाए जाने से लेकर कनान प्रवेश तक इस्राएलियों के इतिहास के बारे में लगभग सभी बातें बताता है, तो यह शीर्षक इस पुस्तक की विषय वस्तु को संपुटित करता है। जो जानकारी गिनती की पुस्तक में दी गई है वह इस्राएलियों के कनान प्रवेश की तैयारी के लिए मूसा द्वारा दिए गए उसके प्रथम भाषण में पाई जाती है (देखें व्यव. 1-3)।

पुस्तक का वर्गीकरण

अंग्रेजी भाषा के पुराने नियम में, इस पुस्तक का वर्गीकरण विधियों की पुस्तकों में किया गया है; इब्रानी बाइबल में, यह *तोराह* की पाँच पुस्तकों में से एक पुस्तक है। इब्रानी बाइबल की दो अन्य वर्गीकरण: भविष्यवक्ता *(नेवीम)* और इतिहास *(केथुवीम)* है। गिनती की पुस्तक "पेंटाट्यूक," पुराने नियम का प्रथम पाँच पुस्तकों को दिया गया यूनानी नाम, जिसका अर्थ "पाँच खण्डों वाली पुस्तक" है, की चौथी पुस्तक है।

लेखक

मूसा का लेखक होने का दावा

पेंटाट्यूक (पंच ग्रंथ) की अन्य पुस्तकों के समान, पारंपरिक रूप से मूसा को गिनती की पुस्तक का लेखक माना जाता है। इन पाँच पुस्तकों को "मूसा की व्यवस्था" कहा जाता है। इस पुस्तक का लेखक मूसा के पक्ष में होने के कई तथ्य हैं:

1. प्राचीन काल से ही यहूदी और मसीही लोग मूसा को इस पुस्तक का

लेखक मानते आए हैं।

2. प्रशिक्षण, क्षमता, अवसर, और पेंटाट्यूक लिखने की प्रेरणा, मूसा को मिली थी।
3. गिनती की पुस्तक एवं पेंटाट्यूक में अन्यत्र, मूसा को इस्राएलियों के इतिहास का लेखक माना जाता है (निर्गमन 17:14; 24:4; 34:27; गिनती 33:2; व्यव. 31:9, 19, 22)। इन पुस्तकों में इस बात का दावा कि व्यवस्था उस पर प्रकट की गई थी, पाया जाता है।
4. नए नियम के अनुच्छेद मूसा को व्यवस्था का लेखक या व्यवस्था को उससे संबंधित करते हैं या पेंटाट्यूक में पाये जाने वाला आज्ञा का स्रोत भी उसी को मानते हैं।

संयुक्त लेखक का दावा

मूसा के विरुद्ध, पेंटाट्यूक का अन्य लेखक होने का दावा इतना विश्वसनीय नहीं है। उदाहरण के लिए, यह आपत्ति जताई जाती है कि मूसा के बारे में ये पुस्तकें उत्तम पुरुष में बातें करती है। इसके प्रत्युत्तर में यह कहा गया है कि अन्य प्राचीन लेखकों ने अपने आपको उत्तम पुरुष में संबोधित किया था। तो मूसा को ऐसा करने की अनुमति क्यों नहीं दी गई थी?

मूसा का इन पुस्तकों का लेखक होने के विषय में इसलिए भी प्रश्न लगाया जाता है क्योंकि यह इस बात का तर्क करता है कि मूसा अपने बारे में वे बातें कभी नहीं कह सकते हैं जो गिनती 12:3 कहती है: "मूसा तो पृथ्वी भर के रहने वाले मनुष्यों से बहुत अधिक नम्र स्वभाव का था।" हाँ, यह आयत समस्या खड़ी करती है। क्या कोई जो नम्र स्वभाव का था वह अपने बारे में यह लिखेगा कि वह नम्र स्वभाव का था? यद्यपि इस प्रश्न पर बाद में विचार किया जाएगा, लेकिन इस समय यह कहना पर्याप्त होगा कि यह एकलौता वक्तव्य मूसा को इन ग्रंथों का लेखक होने से अस्वीकार नहीं करता है।

मूसा का लेखक होने के विपरीत, उदारवादी[2] विद्वान "प्रमाणविषयक परिकल्पना," जो पेंटाट्यूक को चार पूर्व दस्तावेजोंः J *(याहविस्ट)*, E *(एलोहिस्ट)*, D *(ड्यूटेरोनोमिस्ट)*, और P *(प्रिस्टली)* से संबंधित करते हैं, प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं।[3] इस विचार धारा के प्रस्तावकों ने गिनती की पुस्तक की विषय वस्तु को चार में से तीन स्रोत को संबंधित किया है: J, E, और P. सामान्य नियम के अंतर्गत्, स्रोत आलोचक "J" स्रोत को "E" स्रोत से अलग नहीं करते हैं, बल्कि वे इस पुस्तक को "JE" और "P" भागों में विभाजित करते हैं।[4] ऐसा माना जाता है कि किसी *प्रीस्टली* लेखक/संपादक ने इस पुस्तक को अंतिम रूप प्रदान किया है। यह तर्क दिया जाता है कि इस *प्रीस्टली* लेखक/संपादक के कारण इस पुस्तक पर याजकों एवं लेवियों की भूमिका और धार्मिक रीति रिवाज पर अधिक जोर दिया गया है।

जिन लोगों का "दस्तावेज़ परिकल्पना" ("Documentary Hypothesis") पर मान्यता है, वे मूसा को पेंटाट्यूक का लेखक नहीं मानते हैं, और इसलिए वे गिनती की पुस्तक को मूसा की रचना नहीं मानते हैं। तथापि, इस विचार धारा के

मान्यताओं में से कुछ लोगों का मानना है कि गिनती की पुस्तक एवं पेंटाट्यूक के शेष भागों में वर्णित परंपरा मूसा के समय की है, जबकि अन्य लोगों की मान्यता है कि मूसा का अस्तित्व एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं था।

"दस्तावेज़ परिकल्पना" ("Documentary Hypothesis") का खण्डन किया जा सकता है। इस विचार धारा के अनुसार गिनती की पुस्तक में ईसा पूर्व छटी या पाँचवीं सदी की लिखित विषय वस्तु पाई जाती है। इस तर्क के अनुसार, पवित्र शास्त्र का यह भाग, "P" से लिया गया है। यद्यपि, गिनती की पुस्तक में "P" स्रोत को जिस विषय वस्तु से संबंधित किया जाता है, उसमें पर्याप्त प्रमाण पाया जाता है कि उसमें लिखित कुछ विषय वस्तु ऐसे हैं जो ईसा पूर्व छटी और पाँचवीं सदी से बहुत पुराने हैं।[5] तथ्य यह है, गिनती की पुस्तक के साथ-साथ पेंटाट्यूक का शेष भाग, ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी के बजाय द्वितीय सहस्राब्दी के दौरान लिखा गया था।[6] गिनती की पुस्तक के लेखक के बारे में "दस्तावेज़ परिकल्पना" (The "Documentary Hypothesis") विचारधारा पेंटाट्यूक के लेखक के बारे में संतोषजनक विश्लेषण प्रस्तुत नहीं करता है।

सारांश

यह बात कि मूसा ने गिनती की पुस्तक लिखी है, किसी अन्य विचार धारा से अधिक मान्य है। फिर भी, यह मानना कि मूसा ही इसका लेखक था, इस संभावना से यह इनकार नहीं करता है कि कालांतर में अभिषिक्त शास्त्रियों या संपादकों ने कुछ लिखित सामग्री जो मूसा ने लिखा था, उसको इसमें जोड़ा और फिर से व्यवस्थित किया, और या इस पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए अन्य स्रोत का भी प्रयोग किया होगा।

पेंटाट्यूक की अन्य चार पुस्तकों के समान, गिनती की पुस्तक भी बेनाम (नए नियम के अधिकांश पत्रियों के समान) है। मसीही लोगों की मान्यता है कि इब्रानी पुराने नियम के भाग के रूप में, यह पुस्तक भी परमेश्वर की प्रेरणा स्रोत है (2 तीमु. 3:16, 17)। जिस रूप में हमें आज यह प्राप्त है, इसे पवित्र आत्मा की कृति ही स्वीकार किया जाना चाहिए (देखें 2 पतरस 1:21)।

तिथि

इस्राएलियों का जंगल भ्रमण लगभग ईसा पूर्व पंद्रहवीं से तेरहवीं सदी के बीच हुआ होगा।[7] चूँकि मूसा ने गिनती की पुस्तक लिखी थी, तो जिन घटनाओं का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, उसके अनुसार इसके लिखे जाने की तिथि भी लगभग वही रही होगी। जो लोग दस्तावेज़ परिकल्पना ("Documentary Hypothesis") मानते हैं और पवित्र शास्त्र की प्रेरणा से इनकार करते हैं, वे इस पुस्तक की तिथि को ईसा पूर्व पाँचवीं सदी बताते हैं।

विशिष्टता

गिनती की पुस्तक, इसकी विषय वस्तु एवं भाषा शैली में, अदभुत विशिष्टता प्रदर्शित करती है:

1. *इसमें साहित्यिक विधा की विविधता या विभिन्न प्रकार की साहित्य पाई जाती है।* यह विविधतता - कुल मिलाकर चौदह अलग-अलग प्रकार के साहित्यिक विधा - जो बाइबल की अन्य पुस्तकों में से सबसे अधिक है, इस पुस्तक में पाई जाती है।[8] पेंटाट्यूक की अन्य पुस्तकों के समान, गिनती की पुस्तक में विधिक विषय पाया जाता है (उदाहरण के लिए, 27:1-11), विवरणात्मक (16:41-50), और पद्य (21:17, 18)। इसके साथ ही, इसमें "पुरालेख संबंधी विषय वस्तु" - अर्थात् दो गिनती (जनगणना) एवं दूसरे आंकड़ों से संबंधित सूची, भी पर्याप्त मात्रा में पाई जाती है। विधिक और विवरणात्मक विषय बारी-बारी से पाए जाते हैं।

2. *इस पुस्तक में "याजकों से संबंधित" अर्थात् याजकों, लेवियों के लिए निर्देश, शुद्धिकरण परंपरा, पर्व, और बलिदान संबंधी, कई बातें पाई जाती हैं।* यद्यपि लैव्यव्यवस्था की पुस्तक "याजकों की हस्तपुस्तिका" मानी जाती है, लेकिन गिनती की पुस्तक, पुराने नियम की अन्य पुस्तकों से वास्तव में याजकों एवं लेवियों की भूमिका, जिम्मेदारी, और विशेषाधिकार के बारे में अधिक सूचना उलब्ध कराती है।

3. *यह पाप और इसके दण्ड को रेखांकित करती है।* गिनती की पुस्तक परमेश्वर के लोगों का बार-बार पाप में गिरना और दुष्ट की विनाशकारी और मृत्यु की शक्ति का शिकार होना प्रदर्शित करती है।

4. *इस पुस्तक की पूरी कहानी में आशा का संकेत विद्यमान है।* निराशाजनक चित्र के बावजूद, इस पुस्तक में आशा की किरण पाई जाती है। यद्यपि इस्राएलियों की एक पूरी पीढ़ी पाप के कारण जंगल में नष्ट हुई, इसके बावजूद परमेश्वर इस बात की घोषणा करता रहा या यह सूचना देता रहा कि इस्राएली लोग प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने की आशा कर सकते हैं। हरेक पाठ जो इस्राएल देश की पाप की सूचना देता रहा (अध्याय 12-14; अध्याय 16; 17; और अध्याय 20; 21; 25), व्यवस्था या व्यवस्था का एक भाग यह बताता रहा कि किसी दिन वे उस देश में समृद्ध होंगे जिसे देने की परमेश्वर ने बाप दादों से प्रतिज्ञा की थी।

अध्याय 12 से 14 में वर्णित पाप के पश्चात, अध्याय 15 मूसा को परमेश्वर की आज्ञा कि इस्राएली लोग कब प्रतिज्ञा का देश, जिसे वह उन्हें रहने के लिए देने जा रहा था, में "प्रवेश करने जा रहे थे," के साथ प्रारंभ होता है (15:1, 2)। अध्याय 16 और 17 के पाप के तुरंत बाद, अध्याय 18 और 19 उस देश में याजकीय और लेवीय पद को मिलने वाले लाभ पर केंद्रित है। अध्याय 20, 21, और 25 में पापों को पुनः गिनाने के बावजूद, प्रतिज्ञा किए गए देश का बंटवारा और उसमें रहने का निर्देश अध्याय 26 से 36 में दिया गया है। यह इस पुस्तक में दी गई आशा को चर्मोत्कर्ष प्रदान करता है, बिलाम की भविष्यवाणी में परमेश्वर के लोगों के लिए आशीषों की अदभुत भविष्यवाणी पाई जाती है (अध्याय 23; 24)।

उद्देश्य

क्या सिद्ध करने के लिए गिनती की पुस्तक लिखी गई थी? जो लोग इसे पहली बार पढ़ते थे, उनके लिए यह क्या उद्देश्य प्रस्तुत करती थी? जो लोग आज इसे पढ़ते हैं उनको इससे कैसे लाभ मिल सकता है?

छुटकारे की कहानी

इस्राएलियों के इतिहास और मानवजाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वर की योजना को अंततः समझने के लिए गिनती की पुस्तक अहम योगदान प्रदान करती है। निश्चित रूप से कहा जाए तो गिनती की पुस्तक के बिना, हमें यह कभी भी समझ नहीं आएगा कि इस्राएलियों को जंगल में चालीस वर्षों तक क्यों भटकना पड़ा या फिर पीनहास के परिवार को "चिरस्थायी याजकपद" की सेवा करने के लिए क्यों चुना गया था (25:13)।

भरोसा रखने वाला विश्वास

निश्चित रूप से गिनती की पुस्तक का निरूपण इसके वर्तमान पाठक एवं भावी पाठकों को महत्वपूर्ण पाठ सिखाने के लिए किया गया था। इन पाठों में तीन पाठ बड़े अक्षरों में लिखे जा सकते हैं: (1) विश्वास जगाना और परमेश्वर पर भरोसा करना, (2) याजक, रीति रिवाज़, और बलिदानों की महत्वपूर्णता, और (3) पाप का घातक परिणाम।

अनुकूलता

गिनती की पुस्तक का लेखक हमें यह बताना चाहता है कि लोग एक जैसे हैं - अर्थात् वे निरंतर पापी हैं। इस कारण, उसने यह स्पष्ट किया कि इस्राएल के लोग, गिनती की पुस्तक में, जिस समय का इसमें वर्णन किया गया है, वैसे ही थे जैसे वे निर्गमन की पुस्तक में वर्णित किए गए हैं। जबकि कभी-कभी वे उन सब बातों को करते रहे जिनको करने के लिए यहोवा ने उनको आज्ञा दी थी, लेकिन वे बहुधा उससे फिर जाते थे। निर्गमन की पुस्तक के समान, गिनती की पुस्तक में भी, भोजन और पानी की व्यवस्था के लिए लोग कुड़कुड़ाए और उन्होंने शिकायत की; निर्गमन की पुस्तक के समान, गिनती की पुस्तक में उनको जंगल में मरने के लिए लाने के लिए परमेश्वर के विरुद्ध उन्होंने दोष लगाया (निर्गमन 14:11, 12; गिनती 14:2, 3)।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है, गिनती की पुस्तक परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को रेखांकित करती है। जिस तरह उसने अपने लोगों को निर्गमन की पुस्तक में उनके पापों के लिए दण्ड दिया, वैसे ही परमेश्वर ने गिनती की पुस्तक में देश को उसके पाप का दण्ड दिया। निर्गमन की पुस्तक के समान परमेश्वर ने गिनती की पुस्तक में भी शिकायत करने वाले इस्राएलियों की आवश्यकताओं की पूर्ति की। उसी तरह, परमेश्वर ने दोनों पुस्तकों में बलवा करने वालों के विरूद्ध निर्णायक प्रतिक्रिया दिखाई। यद्यपि परमेश्वर के पास इस्राएलियों को त्यागने के

कई कारण थे, लेकिन इसके बावजूद वह उनको अपना अनुग्रह दिखाता रहा।

गिनती की पुस्तक में वर्णित दो गिनती (जनगणना) द्वारा परमेश्वर की उसके लोगों के प्रति निरंतर चिंता व्यक्त होती है। प्रथम गिनती (जनगणना) बताती है कि देश में बीस से अधिक आयु के 6,03,550 पुरुष थे (1:46)। जब इस्राएलियों ने जंगल में लगभग चालीस वर्षों तक भ्रमण किया तो दूसरी गिनती (जनगणना) यह बताती है कि उसी आयु वर्ग के 6,01,730 पुरुष थे (26:51)। ये आंकड़े इस बात को प्रमाणित करते हैं कि जंगल भ्रमण के दौरान, देश के लोगों की संख्या ज्यादा नहीं घटी थी।[9] जब हम (1) जंगल में जीवित रहने की परिस्थिति, (2) जब लोग इस बात के लिए विलाप करते थे कि इस्राएलियों की "पत्नियां और बच्चे" लूट लिए जाएंगे (14:3), (3) यह तथ्य कि "छोटे बच्चे" जीवित रहेंगे, और (4) चालीस के वर्ष के अंत में राष्ट्र की संख्या लगभग उतनी ही थी जितनी कि वह प्रारंभ में थी, तो इन बातों पर हम केवल परमेश्वर की महानता और भलाई पर अचंभित हो सकते हैं। उनकी पापमय प्रवृति के बावजूद परमेश्वर अपने लोगों के पाप क्षमा करने, उनसे प्रेम करने, उन्हें आशीष देने, और उन्हें अपनी वाचा के आधीन बनाए रखने के लिए भला था। उसकी महानता इस्राएलियों को ऊसर जंगल में चालीस वर्षों तक जीवित रखने में दिखाई देती थी। उसका निरंतर बने रहने वाला प्रेम और सामर्थ्य अदभुत है।

घटनाक्रम

निर्गमन और जंगल भ्रमण की घटना कब घटी? ये घटनाएं एक दूसरे के साथ कैसे संबंधित है? इन घटनाओं में कितना समय लगा होगा? ऐसा लगता है कि पेंटाट्यूक में समय से संबंधित महत्वपूर्ण अनुच्छेद इन प्रश्नों का उत्तर ढूंढने में हमारी सहायता करेंगे।

गिनती 33:3 के अनुसार, इस्राएलियों ने "पहले महीने के पन्द्रहवें दिन को ... रामसेस से कूच किया; फसह के दूसरे दिन इस्राएली सब मिस्रियों के देखते बेखटके निकल गए।" मिस्र से निकलने के तीसरे महीने, इस्राएली लोग सीनै पर्वत पहुँचे (निर्गमन 19:1)।

निर्गमन के पश्चात दूसरे वर्ष के प्रथम महीने के प्रथम दिन, निवास स्थान खड़ा किया गया (निर्गमन 40:17)। उस समय "उस दिन बादल उस पर छा गया" (गिनती 9:15), और सारे सामान समेत उसका अभिषेक करके उसको पवित्र किया (7:1)। उसी महीने, यहोवा ने मूसा और इस्राएलियों को फसह मनाने के लिए कहा (9:1, 2, 3, 5)।

यहोवा ने मूसा को दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के प्रथम दिन, गिनती 1 में वर्णित कथा के अनुसार लोगों की गिनती करने का आदेश दिया (1:1)। दूसरे वर्ष के दूसरे महीने के बीसवें दिन, इस्राएलियों ने सीनै से कूच किया और कनान के लिए यात्रा जारी रखी (10:11, 12)।

इसके आगे के घटनाक्रम का विश्लेषण 20:1 तक नहीं पाया जाता है; जब

“पहिले महीने में सारी इस्राएली मण्डली के लोग सीनै नाम जंगल में आ गए, और कादेश में रहने लगे।” संभवतः, यह निर्गमन के चालीसवें वर्ष का प्रथम महीना था। रोनॉल्ड बी. एल्लन ने इस दृष्टिकोण के लिए यह तर्क प्रस्तुत किया: “वर्ष का विवरण नहीं किया गया है, लेकिन जब 20:22-29 की तुलना 33:38 से किया जाता है तो यह इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि यह तिथि निर्गमन के पश्चात चालीसवाँ वर्ष है; अर्थात्, पिछले अध्यायों की घटनाओं के अड़तीस वर्ष पश्चात।”[10] उनके पाप के कारण, परमेश्वर ने इस्राएलियों को चालीस वर्ष की जंगल की यात्रा में भेज दिया था। चालीस वर्ष की समयावधि में लाल समुद्र पार करने से सीनै पहुँचने तक का समय सम्मिलित है। इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के चालीसवें वर्ष के पांचवें महीने के पहिले दिन को हारून याजक यहोवा की आज्ञा पाकर होर पर्वत पर चढ़ा, और वहाँ मर गया (33:38)।

चालीसवें वर्ष के ग्यारहवें महीने के पहिले दिन को यहोवा ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में मूसा को इस्राएलियों से कहने की आज्ञा दी थी, उसके अनुसार मूसा उन से ये बातें कहने लगा (व्यव. 1:3)। व्यवस्थाविवरण यह भी बताता है कि इस्राएलियों ने जंगल में लगभग चालीस वर्ष बिताए (व्यव. 2:7) और इस्राएलियों का “कादेशबर्ने छोड़कर जेरेद नदी के पार होने तक” अड़तीस वर्ष बीत चुके थे, “उस बीच में यहोवा की शपथ के अनुसार उस पीढ़ी के सब योद्धा छावनी में से नाश हो गए थे” (व्यव. 2:14)।

ये समय सारणी यह बताती है कि गिनती की पुस्तक की विषय वस्तु क्रमानुसार व्यवस्थित नहीं की गई है। इसलिए, इस पुस्तक में पाई जाने वाली विधियां इनके क्रमानुसार नहीं हो सकती है। गिनती की पुस्तक की निम्नलिखित आयतें यह बताती है कि कौन सी घटना कब घटित हुई:

1:1	परमेश्वर ने सीनै के जंगल में मूसा से मिलापवाले तम्बू में कहा
7:1	निवास स्थान खड़ा करने के पश्चात् इसे पवित्र किया गया
7:10-88	संस्कार की भेंट वेदी के समीप लाई गई
9:1, 2	परमेश्वर की जंगल में मूसा से बातचीत
9:3, 5	फसह का पर्व मनाया जाना
9:10, 11	फसह मनाएं
9:15	निवास स्थान पर बादल छाना
10:11, 12	सीनै से इस्राएलियों का प्रस्थान
20:1	इस्राएली लोग कादेश पहुँचे
33:3	इस्राएलियों का मिस्र देश से निकलना
33:38	हारून की मृत्यु

संरचना

गिनती की पुस्तक की स्पष्ट रूपरेखा नहीं है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, उदारवादी आलोचकों का मत है कि इस पुस्तक की विषय वस्तु की विविधता एवं इसकी संरचना के अभाव के कारण, इसे पूरी तरह एक "पुस्तक" नहीं कहा जा सकता है।[11] इसके पाठ को, विषय वस्तुओं का संकलन कहा जा सकता है जो कहीं भी अनुरूप नहीं बैठता है। सच कहा जाए तो रूढ़िवादी विद्वान भी यह मानते हैं कि इसमें थोड़ी तर्कसंगत संरचना पाई जाती है। जेम्स बर्टन कॉफमैन के अनुसार इस पुस्तक में केवल एक ही संरचना सिद्धांत, अनुक्रम का अनुकरण किया गया है। वे एडम क्लार्क के विचार धारा से सहमत थे कि गिनती की पुस्तक को मूसा की दैनिक विवरणिका समझा जा सकता है।[12]

अन्य लेखक इस पुस्तक के विषय वस्तु को तर्कसंगत व्यवस्थित रूप के प्रति अधिक सकारात्मक संभावनाएं व्यक्त करते हैं। इस पुस्तक का सर्वमान्य संरचना भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर तिहरा विभाजन मानी जाती है:

I. सीनै
II. कादेश
III. मोआब का मैदान

डेनिस टी. ओल्सन ने पाया कि लोगों की दो गिनती इस पुस्तक को दो भागों में बांटती है:[13]

I. प्राचीन जंगल भ्रमण पीढ़ी की मृत्यु (1-25)
II. प्रतिज्ञा के देश की डेवढ़ी पर नई पीढ़ी का उदय (26-36)

गिनती 1-25 पुरानी पीढ़ी, उनकी असफलता, और उनके अंत के दिनों के बारे में है; इस भाग का विषय वस्तु पाप और मृत्यु है। गिनती 26-36 नई पीढ़ी के बारे में है; इसका विषय वस्तु आशा है। ओल्सन के विचार के अनुसार इस पुस्तक का शीर्षक "पुरानी पीढ़ी का अंत और नई पीढ़ी का उदय" हो सकता है।[14]

दूसरी रूपरेखा इस तथ्य पर आधारित है कि इस पुस्तक का अधिकांश भाग प्रतिज्ञा के देश में जाते हुए पारान के जंगल में यात्रा करते हुए इस्राएलियों के अनुभव के बारे में है। इस दृष्टिकोण से, गिनती की पुस्तक को तीन शीर्षक के अंतर्गत् विभाजित किया जा सकता है:

I. जंगल की यात्रा के लिए तैयारी (1-10)
II. जंगल में यात्रा (11-25)
III. जंगल से बाहर निकलकर प्रतिज्ञा के देश में यात्रा की तैयारी (26-36)

इस प्रकार का विश्लेषण यह प्रकट करता है कि इस पुस्तक के प्रथम और अंतिम भाग में विधियां और अभिलेखीय विषय वस्तु है, जबकि इसके मध्य भाग में उनकी

कहानियां हैं।

इस टीका में प्रयोग की गई रूपरेखा, भौगोलिक विविधता की रूपरेखा है, जिससे गिनती की पुस्तक को "जंगल में" इस्राएलियों के यात्रा के समय की दैनिक विवरणिका के रूप में देखा जा सकता है।

I. सीनै का जंगल (1:1-10:10)
II. पारान के जंगल की ओर यात्रा (10:11-12:16)
III. पारान का जंगल (13:1-20:21)
IV. मोआब के मैदान की ओर यात्रा (20:22-22:1)
V. मोआब का मैदान (22:2-36:13)

अनुप्रयोग

मनुष्य का पाप और परमेश्वर का प्रेम

पूरे इतिहास में, गिनती की पुस्तक को अनदेखा व उसकी अवहेलना की गई है। जब मुझे लगभग 1990 में लिप्सकाम्ब विश्वविद्यालय में स्नातक कक्षा में गिनती की पुस्तक पढ़ाने के लिए कहा गया, तो मैंने सोचा, "गिनती! कौन गिनती पढ़ाना चाहेगा?" फिर भी, जैसे मैंने गिनती की पुस्तक पढ़ाना आरंभ किया तो मैंने पाया कि गिनती की पुस्तक एक अदभुत पुस्तक है जिसमें आत्मिक पाठ भरपूरी से पाया जाता है।

हम गिनती की पुस्तक का अध्ययन इसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अवलोकन करके प्रारंभ कर सकते हैं। निर्गमन की पुस्तक हमें बताती है कि परमेश्वर ने कैसे इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया, सीनै पर उसने अपने लोगों के साथ वाचा बांधी, और उसने उन्हें निवास स्थान बनाने के लिए विधियां और निर्देश दिए। निवास स्थान का निर्माण पूरा होने के साथ ही पुस्तक समाप्त होती है। इसके पश्चात् लैव्यव्यवस्था की पुस्तक - विशेषकर पर्व, धार्मिक रीति रिवाज़, और मूसा की प्रणाली के अनुसार बलिदान विधि - जिसे परमेश्वर ने इस्राएलियों को उस वर्ष दिया था, जब उन्होंने सीनै में समय बिताया था, से संबंधित कई अन्य विधियों की सूची जारी करता है।

गिनती की पुस्तक में दो बातों पर जोर दिया गया है, जिसमें से हरेक की व्याख्या पुस्तक को दिए नाम के द्वारा की गई है। इब्रानी भाषा में पहले का अर्थ "जंगल में"; और दूसरा "गिनती" जो सेप्टुजिंट में यूनानी नाम से उद्धृत है।

"जंगल में": इस्राएलियों का पाप। वाक्यांश "जंगल में" इस पुस्तक का योग्य नाम है जो मुख्यतः इस्राएलियों का जंगल में चालीस वर्ष भ्रमण की बाइबल में वर्णित सूचना का अभिलेख प्रस्तुत करता है। इस पुस्तक से, हम यह सीखते हैं कि यह एक ऐसा समय था जब इस्राएली निरंतर कुड़कुड़ाते रहे और परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह करते रहे। परमेश्वर के दण्ड के साथ ही उनके पापों की सूची निम्नवत है:

11:1-3	तबेरा में लोग कुड़कुड़ाए और यहोवा की आग उनके मध्य जल उठी।
11:4-35	उन्होंने इसलिए शिकायत की क्योंकि उनके पास खाने के लिए मांस नहीं था। परमेश्वर ने बटेर भेजे किंतु इसके साथ उसने मरी भी भेजी।
12:1-15	मरियम और हारून, मूसा के अधिकार के विरूद्ध हो गए; मरियम को कोढ़ हो गया।
13:1-14:35	उन्होंने दस भेदियों की निराशाजनक सूचना पर भरोसा किया और प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने से इनकार किया। कुछ तो उसी क्षण मारे गए और सभी जवान पुरुष (यहोशू और कालिब को छोड़कर) जंगल में ढेर हो गए।
15:32-36	किसी व्यक्ति ने सब्त के दिन लकड़ियां बटोर कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और उसे पत्थरवाह करके मार डाला गया।
16:1-35	कोरह, दातान, अबीराम, और अन्य 250 ने मूसा के विरूद्ध विद्रोह किया और परिणामस्वरूप वे मारे गए।
16:41-50	लोगों ने विद्रोहियों के प्रति सहानुभूति जताई और मूसा के विरूद्ध कुड़कुड़ाए। परमेश्वर ने मरी भेजी; इसके थमने से पहले लगभग 15,000 लोग मर गए।
20:9-12	मूसा ने चट्टान से बात करने के बजाय उस पर लाठी मारकर स्वयं पाप किया। परमेश्वर ने उसे प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश नहीं करने दिया।
21:4-6	लोगों ने परमेश्वर और मूसा के विरूद्ध बातें की और परमेश्वर ने उन्हें तेज विष वाले सांपों से दण्डित किया।
25:1-15	उन्होंने मोआबियों की पुत्रियों के साथ कुकर्म किया; परमेश्वर ने मरी भेजकर 24,000 लोगों को एक दिन में मारा।

इन घटनाओं के कारण इस पुस्तक का मुख्य शीर्षक "पाप और उसका दण्ड" होना चाहिए।

इस पुस्तक का पाठ यह विश्लेषण करता है कि जिस यात्रा को केवल कुछ हफ्ते या महीने में पूरा किया जा सकता था उसे पूरा करने के लिए चालीस वर्ष क्यों लगे। यदि इस्राएलियों ने पाप न किया होता तो लगभग चालीस वर्षों तक जंगल में भ्रमण करने के बजाय सीधे प्रतिज्ञा के देश में चले गए होते! ये उदाहरण हमको पाप की त्रासदी सिखाती है, क्योंकि जो लोग उसकी आज्ञा नहीं मानते हैं परमेश्वर उनको दण्डित करता है।

"गिनती": परमेश्वर का प्रेम। यद्यपि, इस पुस्तक की विषय वस्तु पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। इस पुस्तक को "गिनती," इसमें उल्लेखित लोगों की दो बार

गिनती करने के कारण कहा जाता है। इनमें से एक इस पुस्तक के आरंभ, अध्याय 1 में पाई जाती है। दूसरी गिनती इस पुस्तक के अंत में पाई जाती है, यह वह समय था जब इस्राएल की नई पीढ़ी, अध्याय 26 में प्रतिज्ञा के देश में प्रवेश करने वाली थी।

इन गिनतियों से जो आंकड़ा सामने आया वह लगभग एक जैसा ही था। दोनों गिनती में बीस वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग के पुरुषों की गिनती की गई थी। प्रथम गिनती में, जिनकी गिनती की गई थी वे 6,03,550 (1:46) थे; दूसरी गिनती में जिनकी गिनती की गई थी वे 6,01,730 (26:51) थे। अलग-अलग गोत्र की संख्या बदल गई थी, लेकिन अड़तीस वर्ष पश्चात, एक गिनती से दूसरे गिनती के बीच का आंकड़ा अधिक नहीं बदला था।

गिनती की आवश्यकता क्यों हुई? स्पष्ट रूप से, दोनों तालिका का अलग-अलग उद्देश्य था। प्रथम गिनती से ऐसा लगता है कि पुरुषों को अपने शत्रुओं के विरूद्ध युद्ध करने के लिए तैयार होना था (1:2, 3)। दूसरा गिनती इस्राएलियों के कनान देश में प्रवेश के पश्चात देश के बंटवारे से संबंधित थी (26:53-55)।

दूसरी गिनती का विशिष्ट कारण भी संभावित है: कि परमेश्वर का अपने लोगों के प्रति प्रेम और उनके प्रति चिंता भी हो सकती है। जब इस्राएली लोग मिस्र में थे तब उसने उनकी संख्या बढाई थी। एक बड़ी संख्या, 6,00,000 से भी अधिक वयस्कों के साथ इस्राएली लोग मिस्र से निकले थे। जंगल में इस्राएलियों का कठिन जीवन था; लोग भोजन और पानी की कमी के कारण कुड़कुड़ाने लगे थे। उनको विद्रोही जातियों का सामना करना था। इसके साथ ही, इस्राएलियों के स्वयं अपने ही शत्रु थे। क्योंकि उन्होंने बार-बार पाप किया था और परमेश्वर ने मरी भेजकर उनको मार डाला। फिर भी, दूसरी गिनती यह दर्शाती है कि उनके जंगल यात्रा की समाप्ति तक लगभग उनकी संख्या उतनी ही थी जितनी आरंभ में थी। यह तथ्य कि लोगों की संख्या अधिक नहीं घटी थी, परमेश्वर की विश्वासयोग्यता की गवाही है।

जो गिनती की पुस्तक में बताई गई कहानी सुनते हैं और वे यह सीखते हैं कि ये दोनों गिनतियाँ एक ही विषय वस्तु के बारे में है जो परमेश्वर की निम्न गुणों का संस्मरण कराती हैं:

1. परमेश्वर भला है। वह हितैषी है, क्योंकि उसने जंगल में अपने लोगों का ध्यान रखा। उसने उनकी अगुआई की, उनकी रक्षा की, उन्हें भोजन खिलाया, और उनके लिए पानी की व्यवस्था की।

2. वह कृपालु है। वह अपने लोगों को उनकी योग्यता से बढ़कर आशीष देता है। जब इस्राएलियों ने पाप किया, तो उसने उनको दण्डित किया; लेकिन उसने उनको वापस बुलाया और उनके पाप क्षमा किए। उसने उनको उनके पाप के कारण नहीं त्यागा। उसने यह प्रमाणित किया कि उसका अनुग्रह उनके पाप से बढ़कर है।

3. वह महान है। विशाल बाधाओं के बावजूद, परमेश्वर ने जो प्रारंभ किया है वह उसको पूर्ण करने की क्षमता रखता है। क्योंकि परमेश्वर भला और दयालु है, वह अपने लोगों का उद्धार करने की इच्छा जताता है और उन्हें प्रतिज्ञा के देश में

ले आता है; क्योंकि वह महान और सामर्थशाली है, उसने ऐसा किया और उन्हें प्रतिज्ञा के देश में पहुँचाया।

जंगल में इस्राएली लोग कैसे जीवित रहे? इस प्रश्न का केवल एक ही उत्तर दिया जा सकता है: परमेश्वर की भलाई और अनुग्रह के कारण, अधिक लोग नष्ट हुए बिना, और देश बना रहा।

उपसंहार। जब परमेश्वर ने इस पुस्तक की लेख को उत्प्रेरित किया, तो वह चाहता था कि उसके लोग उसके बारे में जानें। हमको भी, यह जानना है कि परमेश्वर कैसा है। गिनती की पुस्तक केवल इस्राएल के लोगों के बारे में ही नहीं है; यह पुस्तक परमेश्वर के बारे में भी है! यह हमें यह बताती है कि हम पाप करके इसके परिणाम से बच नहीं सकते हैं: परमेश्वर पाप को दण्डित करता है। अपने पाप के कारण पाप क्षमा न प्राप्त किए पापी नष्ट हो जाते हैं।

आइये हम उसकी भलाई, सारी अच्छी वस्तुओं के लिए जो वह हमें देता है और जो वह हमारे लिए करता है, परमेश्वर की स्तुति करें। आइये हम उसके अनुग्रह के लिए उसकी स्तुति करें। जिसके हम योग्य हैं वह हमको नहीं देता है, बल्कि जब हम उसकी आज्ञा मानते हैं तो वह हमको भरपूरी से आशीषित करता है। जब हम उसके वचन के अनुसार अपने उद्धार के लिए उसकी ओर ताकते हैं, तो यद्यपि हम पापी ही हैं, फिर भी वह हमारा उद्धार करता है। आइए हम उसकी महानता के लिए उसकी स्तुति करें: जो कुछ परमेश्वर ने करने के लिए ठाना है वह उसे पूरा करेगा। उसके लिए कोई कार्य कठिन नहीं है! वह बुरी परिस्थितियों में भी भलाई उत्पन्न करता है। वह हमारी उम्मीदों से भी बढ़कर हमारी सहायता करता है। आइये हम उसके सम्मुख झुक जाएं और नम्र होकर आज्ञाकारिता के साथ उसकी ओर फिर जाएं ताकि - यद्यपि इसके हम योग्य तो नहीं हैं - तौभी हम बच जाएं।

समाप्ति नोट्स

[1]डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2001), 169. [2]"उदारवादी" उन विद्वानों का उल्लेख करती है जो बाइबल को मौखिक प्रेरणा स्रोत स्वीकार नहीं करते हैं। परिणामस्वरूप, ये आलोचक बाइबल कथा की आश्चर्यकर्म पहलू का इनकार करते हैं। [3]कॉय रॉपर, *निर्गमन,* ट्रूथ फॉर टूडे कमेंट्री (सीर्सी, आर्कांससः रेसॉर्स पब्लिकेशंस, 2008), 651-55. [4]हार्वे जे. गथरी, जूनियर, "द बुक आफ गिनती," *इंटरप्रेटर्स वन वोल्यूम कमेंट्री आन द बाइबल,* संपादक चार्ल्स एम. लेमन (नैशविलः अबिंगदन प्रेस, 1971), 85. [5]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 21-23. [6]उपरोक्त, 24; जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन लैव्यव्यवस्था एण्ड गिनती: द थर्ड एण्ड फोर्थ बुक्स आफ मोजेज* (एबीलीन, टेक्सासः ए.सी.यू. प्रेस, 1987), 266-69. [7]रॉपर, 656-59. [8]जेकब मिलग्रोम ने इस पुस्तक में चौदह अलग-अलग साहित्यिक विधा की पहचान की है। (जेकब मिलग्रोम, *गिनती,* द जेपीएस तोराह कमेंट्री [फिलाडेलफियाः ज्यूविश पब्लिकेशन सोसाइटी, 1990], xiii.) [9]जबकि कुछ गोत्रों की संख्या घटी थी तो दूसरे गोत्रों की संख्या बढ़ी। कुछ टीकाकारों का मानना है कि सीनै पर्वत छोड़ने के चालीस वर्ष पश्चात् इस्राएली लोगों की संख्या नहीं बढ़ी थी, लेकिन यह अधिक महत्वपूर्ण जान पड़ता है - जंगल में जीवित रहने की कठिन परिस्थितियों के बावजूद - उन्होंने अपनी संख्या एवं बल बनाए

रखा। [10]रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स बाइबल कमेंट्री*, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 670.

[11]उपरोक्त, 668-69. [12]कॉफमैन, 265-66; देखें एडम क्लार्क, *द होली बाइबल विद ए कमेंट्री एण्ड क्रिटिकल नोट्स*, वॉल्यूम 1, *उत्पत्ति-व्यवस्थाविवरण* (नैशविलः अबिंगदन प्रेस, n.d.), 721. [13]डेनिस टी. ओल्सन, "गिनती," *डिक्सनरी आफ दि ओल्ड टेस्टामेंटः पेंटाट्यूक*, संपादक टी. डेसमंड एलेक्जेंडर एण्ड डेविड डब्ल्यु. बेकर (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटरवार्सिटी प्रेस, 2003), 614. [14]डेनिस टी. ओल्सन, *द डेथ आफ दि ओल्ड एण्ड द बर्थ आफ द न्यूः द फ्रेमवर्क आफ द बुक आफ नम्बर्स एण्ड द पेंटाट्यूक*, ब्राऊन जूडाइक स्टडीज, वॉल्यूम 71 (चीको, केलीफोर्नियाः स्कॉलर्स प्रेस, 1985)।